पाठ - यह दंतुरहित मुस्कान और फसल

शब्दार्थ

1. तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान …… पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण

शब्दार्थ

- **दंतुरित-नन्हें**–नन्हें निकलते दाँत
- **मुस्कान**–मुस्कराहट
- **मृतक**–जिस व्यक्ति के प्राण निकल गए हों
- **धूलि**–धूल
- **धूसर**–पीलापन लिए भूरा या मटमैला रंग
- **गात**–शरीर, काया, जिस्म, बदन, देह, तन
- **जलजात**–जो जल में उत्पन्न हो, कमल
- **परस**–स्पर्श, छूना

प्रसंग–उपरोक्त पंक्तियों में कवि अपने छोटे से बच्चे की मुस्कराहट का अद्भुत वर्णन कर रहे हैं। कवि बच्चे की मुस्कराहट को इतना प्रभावशाली बताते हैं कि वो किसी भावहीन व्यक्ति में भी भावनाओं को जगा सकती है और किसी कठोर हृदय व्यक्ति को भी सरल स्वभाव सीखा सकती है।

व्याख्या–कवि अपने छोटे से बच्चे की मन को हरने वाली मुस्कान को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तुम्हारी ये छोटे-छोटे दाँतों वाली मुस्कान इतनी मनमोहक है कि वह किसी मुर्दे अर्थात मरे हुए व्यक्ति में भी जान डाल सकती हैं। कहने का आशय यह है कि तुम्हारी ये निश्छल मुस्कान जीवन की कठिन परिस्थितियों से निराश–हताश हो चुके व्यक्तियों और यहाँ तक कि बेजान व्यक्ति को भी जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं, अगर कोई तुम्हारी इस छोटे–छोटे दाँतों वाली मुस्कान को देख ले तो वह भी एक बार प्रसन्नता से खिल उठे। उसके भी मन में इस दुनिया की ओर आकर्षण जाग उठे।

आगे कवि कहते हैं कि तुम्हारे इस धूल से सने हुए नन्हे तन को देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि मानों कमल के फूल तालाब को छोड़कर मेरी झोंपड़ी में खिल उठते हो। कहने का आशय यह है कि तुम्हारे धूल से सने नन्हे से तन को निहारने पर मेरा मन कमल के फूल के समान खिल उठा है अर्थात् प्रसन्न हो गया है।

ऐसा लगता है कि तुम जैसे प्राणवान का स्पर्श पाकर ये कठोर चट्टानें पिघल कर जल बन गई होगी। कहने का आशय यह है कि बच्चे की मधुर मुस्कान देख कर पत्थर जैसे कठोर हृदय वाले मनुष्य का मन भी पिघलाकर अति कोमल हो जाता है।

सरलार्थ–इस कविता में कवि एक ऐसे बच्चे की मधुर मुस्कराहट की सुंदरता का बखान करता है जिसके अभी एक–दो दाँत ही निकले हैं, अर्थात बच्चा छ:- से आठ महीने का है। जब ऐसा बच्चा अपनी मुसकान बिखेरता है तो इससे मुर्दे में भी जान आ जाती है। छोटे से बच्चे के स्पर्श मात्र भर से ही कठोर से कठोर हृदय वाले व्यक्ति के दिल में भी कोमल भावनाएँ जन्म लेने लगती है। कहने का तात्पर्य यह है कि एक छोटे से बच्चे की मुस्कराहट किसी के क्रोधित स्वभाव को परिवर्तित करने में सक्षम होती है।

2. छू गया तुमसे कि झरने …….. आँख लूँ मैं फेर ?

शब्दार्थ

- **कठिन**–कठोर

egyanarchive

- **पाषाण**–पत्थर
- **शेफालिका**–छह से बारह फुट ऊँचा एक सदाबहार पौधा जिसमें अरहर के समान पाँच-पाँच पत्तियाँ होती हैं और इसके पूरे शरीर पर छोटे-छोटे रोम पाए जाते हैं, नील सिंधुआर का पौधा, निर्गुंडी, निलिका
- **अनिमेष**–बिना पलक झपकाए, बिना पलक गिराए हुए, अपलक, एकटक
- **फेर**–हटाना

प्रसंग–इस काव्यांश में कवि अपने स्वभाव में आए परिवर्तन के लिए बच्चे की मुस्कराहट को कारण बताता है और जब पहली बार देखने के कारण बच्चा अपने पिता यानि कवि को पहचान नहीं पा रहा था और वह एकटक दृष्टि से कवि को देखे जा रहा था, तब कवि के अंदर पिता का प्रेम उसे न चाहते हुए भी अपने बच्चे से नज़रें फेरने को कहता है।

व्याख्या–कवि को ऐसा लगता है कि उनके उस छोटे से बच्चे के निश्छल चेहरे में वह जादू है कि उसको छू लेने से बाँस या बबूल से भी शेफालिका के फूल गिरने लगते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन की विपरीत परिस्थितियों के कारण कवि का मन बाँस और बबूल की भाँति शुष्क और कठोर हो गया था। बच्चे की मधुर मुस्कराहट को देखकर उसका मन अथवा स्वभाव भी पिघल कर शेफालिका के फूलों की भाँति सरस और सुंदर हो गया है। बच्चा पहली बार अपने पिता (कवि) को देख रहा हैं। इस कारण कवि आगे उस छोटे से बच्चे से कहते हैं कि ऐसा लगता है कि तुम (छोटा बच्चा) मुझे (कवि / पिता) पहचान नहीं पाये हो क्योंकि बच्चा कवि को अपलक अर्थात बिना पलक झपकाए देख रहा है। कवि उस बच्चे से कहते हैं कि यदि वह बच्चा इस तरह अपलक कवि को देखते–देखते थक गया हो तो उसकी सुविधा के लिए कवि उससे आँखें फेर लेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि कवि बच्चे से उसके पास खड़ा होकर पूछता है कि तुम मुझे इस तरह लगातार देखते हुए थक गए होंगे। इसलिए लो मैं तुम पर से अपनी नजर स्वयं हटा लेता हूँ। ताकि बच्चा भी अपनी पलकें झपकाए और उसे आराम मिले।

सरलार्थ–उपरोक्त पंक्तियों में कवि स्वीकार कर रहें हैं कि परिस्थितियों के कारण उनका जो स्वभाव बदल गया था, बच्चे की मुस्कराहट ने उनकी सारी परेशानियों को भुला कर उनके कठोर हृदय को फिर से पहले जैसा कर दिया है। इस काव्यांश में हमें एक पिता का अद्भुत प्रेम भी देखने को मिलता है। क्योंकि जब बच्चा अपने पिता को पहचानने के लिए उसे एकटक दृष्टि से देख रहा होता है तब उस बच्चे को इस तरह कोई परेशानी न हो जाए, वह पिता न चाहते हुए भी अपने बच्चे से नजर फेरने को भी तैयार हो जाता है।

3. क्या हुआ यदि हो सके परिचित न पहली बार? ..... चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!

शब्दार्थ

- **परिचित**–जिसका परिचय प्राप्त हो, जिसे जानते हों, जाना–पहचाना हुआ
- **माध्यम**–साधन, ज़रिया, (मीडियम)
- **धन्य**–प्रशंसा या बड़ाई के लायक, परोपकार करने वाला
- **चिर**–जो बहुत दिनों से हो, बहुत दिनों तक चलता रहे, दीर्घ कालव्यापी
- **प्रवासी**–परदेश में रहने वाला व्यक्ति, मूलस्थान छोड़कर अन्य स्थान में बसा व्यक्ति, प्रवास करने वाला

egyanarchive

- **इतर**–अन्य, कोई और, दूसरा, भिन्न

प्रसंग–इस काव्यांश में कवि उस स्थिति का वर्णन कर रहें हैं जब बच्चा लगातार कवि को देखे जा रहा है और उन्हें पहचानने की कोशिश कर रहा हैं। इसे देखकर कवि बच्चे से कह रहे है कि उन्हें इस बात का कोई अफसोस नहीं हैं कि पहली बार की मुलाकात में उनकी ठीक से जान पहचान नहीं हो पा रही हैं। बल्कि मैं तो इस बात से ही खुश हैं कि वे अपने बच्चे से मिल पाए या उसे देख पाए।

व्याख्या–कवि अपने नन्हें शिशु को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तुम मुझे पहली बार देख रहे हो, इसलिए यदि मुझे पहचान भी न पाए तो वह स्वाभाविक ही है। कहने का तात्पर्य यह है कि कवि को इस बात का जरा भी अफसोस नहीं है कि बच्चे से पहली बार में उसकी जान पहचान नहीं हो पाई है। एक माँ ही बच्चे को जन्म देकर इस धरती पर लाती हैं। इसीलिए कवि कह रहे हैं कि तुम्हारी माँ के माध्यम से ही आज मैं तुमसे मिल पाया हूँ। अगर तुम्हारी माँ ने माध्यम बनकर मुझे तुमसे ना मिलाया होता तो, मैं तुम्हें नहीं जान पाता। इसलिए मैं तुम्हारा और तुम्हारी माँ का आभारी हूँ। और तुम दोनों को दिल से धन्यवाद देता हूँ। अर्थात कवि इस बात के लिए उस बच्चे की माँ अर्थात अपनी पत्नी और अपने बच्चे का शुक्रिया अदा करना चाहता है कि उनके कारण ही कवि को भी उस बच्चे के सौंदर्य का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। तुम्हारी माँ अर्थात कवि की पत्नी ने ही उन्हें बताया कि वह बच्चा उनकी ही संतान है, नहीं तो मैं तुम्हारे दाँतों से झलकती मुस्कान को भी नहीं जान पाता। कवि आगे कहते हैं कि मैं सदा घर से बाहर (अन्य प्रदेश या जगह) रहता हूँ और बहुत दिनों बाद आज घर आया हूँ। इसलिए मैं तुम्हारे लिए किसी अनजान व्यक्ति की तरह या किसी मेहमान की तरह ही हूँ। अर्थात कवि तो उस बच्चे के लिए एक अजनबी है, परदेसी है इसलिए वह खूब समझता है कि उससे उस बच्चे की कोई जान पहचान नहीं है।

सरलार्थ–बच्चा लगातार कवि को देखे जा रहा है और उन्हें पहचानने की कोशिश कर रहा हैं। इसे देखकर कवि बच्चे से कह रहे है कि मुझे इस बात का कोई अफसोस नहीं हैं कि पहली बार की मुलाकात में हमारी ठीक से जान पहचान नहीं हो पा रही हैं। बल्कि मैं तो इस बात से ही खुश हूँ कि मैं तुमसे मिल पाया या तुम्हें देख पाया। तुम्हारी माँ भी तुम्हें जन्म देकर और तुम्हारी सुन्दर रूप–छवि निहारने के कारण धन्य है। दूसरी ओर एक मैं हूँ जो लगातार लम्बी यात्राओं पर रहने से तुम दोनों से पराया हो गया हूँ। इसीलिए मुझ जैसे अतिथि से तुम्हारा सम्पर्क नहीं रहा अर्थात् मैं तुम्हारे लिए अनजान ही रहा हूँ। और तुम्हारा इस अतिथि से पहले कोई संबंध रहा भी नहीं यानि तुमने मुझे पहले कभी देखा भी नहीं।

4. इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा संपर्क ..... मुझे लगती बङी ही छविमान !

शब्दार्थ

- **अतिथि**–मेहमान
- **संपर्क**–मिलावट, संयोग, मेल, संबंध, आपसी लगाव, वास्ता, संगति
- **मधुपर्क**–पूजा के लिए बनाया गया दही, घी, जल, चीनी और शहद का मिश्रण, पंचामृत, चरणामृत
- **कनखी**–आँख की कोर, दूसरों की निगाह बचाकर किया जाने वाला संकेत, तिरछी निगाह से देखने की क्रिया, आँख का इशारा

egyanarchive

- **आँखें चार**–(मुहावरा)–प्रेम होना, किसी का आमने-सामने होना, नजरों से नजरों का मिलना
- **छविमान**–सुंदर, मनमोहक

प्रसंग–इस काव्यांश में कवि अपना और अपने बच्चे के बीच मेहमानों वाला संपर्क बनने का कारण स्पष्ट करते हैं और माँ और बच्चे के वात्सल्य को अत्यधिक मनोरम ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं। और साथ ही साथ बच्चों के नटखट पन को भी दिखने का प्रयास कर रहे हैं।

व्याख्या–कवि अपने आपको किसी मेहमान की तरह बताते हुए कहते हैं कि वे हमेशा ही काफी लम्बे समय तक घर से दूर रहते हैं जिस कारण वे न तो अपनी पत्नी से मिल पाए और न ही अपने बच्चे से, इसीलिए कवि अपने बच्चे से कहते हैं कि मुझ जैसे अतिथि से तुम्हारा सम्पर्क नहीं रहा अर्थात् मैं तुम्हारे लिए अनजान ही रहा हूँ। यह तो तुम्हारी माँ है जो तुम्हें अपनी उँगलियों से तुम्हें मधुपर्क चढ़ाती रही अर्थात् तुम्हें वात्सल्य भरा प्यार देती रही। कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चा अपनी माँ की उँगली चूस रहा है तो ऐसा लगता है कि उसकी माँ उसे पंचामृत का पान करा रही है। इस बीच वह बच्चा तिरछी निगाह से कवि को देखता है। तब कवि उसकी इन हरकतों पर कहते हैं कि अब तुम इतने बड़े हो गये हो कि तुम तिरछी नजर से मुझे देखकर अपना मुँह फेर लेते हो, इस समय भी तुम वही कर रहे हो। इसके बाद जब मेरी आँखें तुम्हारी आँखों से मिलती है अर्थात् तुम्हारा–मेरा स्नेह प्रकट होता है, तब तुम मुस्करा पड़ते हो। इस स्थिति में तुम्हारे निकलते हुए दाँतों वाली तुम्हारी मधुर मुस्कान मुझे बहुत सुन्दर लगती है और मैं तुम्हारी उस मधुर मुस्कान पर मुग्ध हो जाता हूँ।

सरलार्थ–उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने उस समय का वर्णन किया हैं जब बच्चे के नये-नये दांत निकलने लगते हैं तो उस वक्त वो हर चीज अपने मुँह में डाल लेते है। माँ की गोद में बैठकर बच्चा माँ की अंगुलियों को चूस रहा है। उसे देखकर कवि को ऐसा लग रहा है जैसे माँ की अंगुलियों से निकलने वाले अमृत को पीकर बच्चे की आत्मा तृप्त हो रही हो। बच्चा यह सब करते हुए बीच–बीच में तिरछी नजरों से कवि को भी देख रहा हैं, जिसे देखकर कवि कहते हैं कि जब भी तुम तिरछी नजरों से मुझे देखते हो और फिर जब हम दोनों की आंखें मिलती हैं तो तुम मुस्करा उठते हो। तब तुम्हारी ये छोटे–छोटे दांतों वाली निश्चल मुस्कान मुझे बहुत ही सुंदर लगती है अर्थात बहुत अधिक मनमोहक लगती है।

egyanarchive

"फसल"

1. एक के नहीं, ... मिट्टी का गुण धर्म ;

शब्दार्थ

- **ढ़ेर सारी**–बहुत अधिक
- **कोटि**–करोड़
- **स्पर्श**–छूना
- **गरिमा**–गुरुत्त्व, भारीपन, महत्व, गौरव, गर्व
- **गुण धर्म**–किसी वस्तु में पाई जाने वाली वह विशेष बात या तत्व जिसके द्वारा वह दूसरी वस्तु से अलग मानी जाए

प्रसंग–अलग–अलग नदियों का पानी जब भाप बनकर उड़ता है तो वो आकाश में बादल के रूप में परिवर्तित हो जाता है। और फिर वही बादल बरस कर धरती पर पानी के रूप में वापस आ जाते हैं। जिससे फसलों को भरपूर पनपने का मौका मिलता हैं। इसी का वर्णन कवि इन पंक्तियों में कर रहे हैं।

व्याख्या– उपरोक्त पंक्तियों में कवि कहते हैं कि एक या दो नहीं बल्कि अनेक नदियों का पानी अपना जादुई असर दिखाता है, तब जाकर फसल पैदा होती हैं। आगे कवि कहते है कि एक नहीं दो नहीं बल्कि लाखों–करोड़ों हाथों के अथक परिश्रम का परिणाम से एक अच्छी फसल तैयार होती है। अर्थात हजारों खेतों पर दुनिया भर के लाखों–करोड़ों किसान दिन रात मेहनत करते हैं। अपनी फसल की देखभाल करते हैं। उसको समय–समय पर खाद, पानी और जरूरी पोषक तत्व देते हैं। तब जाकर कहीं फसल खेतों पर लहलहा उठती है। अच्छी फसल उगाने के लिए खेतों की मिट्टी अच्छी होनी चाहिए। इसीलिए कवि कहते हैं कि एक या दो नहीं बल्कि हजारों खेतों की उपजाऊ मिट्टी के पोषक तत्व भी इन फसलों के अंदर छुपे हुए हैं। क्योंकि मिट्टी की विशेषताएं भी फसलों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। यानी मिट्टी से मिलने वाले जरूरी पोषक तत्व फसलों के लिए जरूरी होते हैं और अलग–अलग तरह की फसलों को उगाने के लिए अलग–अलग तरह की मिट्टी व उसके गुण आवश्यक होते हैं।

सरलार्थ–उपरोक्त पंक्तियों में कवि फसल को तैयार होने में किन–किन चीज़ों की आवश्यकता होती है, उनका वर्णन कर रहे हैं। नदियों का पानी जब भाप बनकर उड़ता है तो वो आकाश में बादल का रूप ले लेता है। और फिर वही बादल वर्षा के रूप में बरस कर धरती पर पानी के रूप में वापस आ जाता है। जिससे फसलों को अच्छी प्रकार से पनपने का मौका मिलता हैं। करोड़ों किसानों की रात–दिन की मेहनत से फसल उगती हैं। अच्छी फसल उगाने के लिए खेतों की मिट्टी अच्छी होनी चाहिए। क्योंकि मिट्टी की विशेषताएं भी फसलों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

2. फसल क्या है ? …… सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का !

शब्दार्थ

- **महिमा**–महत्वपूर्ण या महान होने की अवस्था या भाव, महानता, बड़ाई, गौरव, बड़प्पन
- **भूरी**–भूरा रंग
- **काली**–काला रंग
- **संदली**–एक प्रकार का हलका पीला रंग
- **रूपांतर**–रूप में परिवर्तन, किसी वस्तु का बदला रूप, (ट्रांसफॉरमेशन)
- **सिमटा**–जिसका संकुचन हुआ हो, सिकुड़ा
- **संकोच**–झिझक, हिचकिचाहट, असमंजस
- **थिरकन**–भावों के साथ पैरों को उठाते, गिराते एवं हिलाते हुए नाचने की अवस्था, थिरक

प्रसंग – फसलों को अच्छी तरह से फलने फूलने के लिए क्या–क्या आवश्यक है उपरोक्त पंक्तियों में कवि इन्हीं का वर्णन कर रहे हैं। किसान की मेहनत के साथ–साथ पानी भी आवश्यक है। साथ में मिट्टी का गुणवत्तापूरक भी जरूरी है। क्योंकि मिट्टी की विशेषताओं के अनुसार ही फसल पैदा होती है। अलग-अलग तरह की मिट्टी में अलग–अलग तरह के पोषक

egyanarchive

तत्व व गुण पाए जाते हैं जिससे अनुसार अलग-अलग तरह की फसलों को पैदा किया जा सकता है। पौधों को बढ़ने के लिए सूरज की किरणें व कार्बन डाइऑक्साइड गैस भी आवश्यक है क्योंकि सूरज की रोशनी में ही ये पौधे मिट्टी से जरूरी पोषक तत्व, पानी व हवा से कार्बन डाइऑक्साइड गैस लेकर अपना भोजन बनाते हैं। जिसे प्रकाश संश्लेषण (Photosynthesis) कहा जाता हैं।

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि पहले तो **प्रश्न** पूछते हैं कि फसल क्या हैं ? फिर उसी **प्रश्न** का **उत्तर** देते हुए कहते हैं कि नदियों के पानी का जादू फसल के रूप दिखाई देता हैं क्योंकि बिना पानी के फसल का उगना नामुकिन हैं। करोड़ों किसानों की दिन–रात की मेहनत का नतीजा फसल के रूप में मिलता हैं। भूरी, काली व खुशबूदार हल्की पीली मिट्टी यानि अलग– अलग प्रकार की मिट्टी के पोषक तत्व और सूरज की किरणें भी अपना रूप बदल कर इन फसलों के अंदर समाहित रहती हैं। क्योंकि सूरज की रोशनी और हवा में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड गैस को अवशोषित कर ही पौधे अपनी पत्तियों के द्वारा भोजन बनाते हैं। जिसे कविता में कवि ने सूरज की किरणों का परिवर्तित रूप और हवा की भावों के साथ पैरों को उठाते, गिराते एवं हिलाते हुए नाचने का नाम दिया हैं।

सरलार्थ–अच्छी तरह से फसलों को फलने फूलने के लिए किसान की मेहनत के साथ–साथ पानी, मिट्टी का गुणवत्तापूरक, अलग–अलग तरह की मिट्टी में अलग- अलग तरह के पोषक तत्व, पौधों को बढ़ने के लिए सूरज की किरणें व कार्बन डाइऑक्साइड गैस आदि की आवश्यकता होती है। करोड़ों किसानों की दिन- रात की मेहनत, नदियों के पानी का जादू, भूरी, काली व खुशबूदार मिट्टी यानि अलग–अलग प्रकार की मिट्टी के पोषक तत्व और सूरज की किरणें भी अपना रूप बदल कर इन फसलों के अंदर समाहित रहती हैं।

यह दंतुरहित मुस्कान

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. बच्चे की दंतुरित मुस्कान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर :- बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर यह प्रभाव पड़ता है कि वह उसे देखकर प्रसन्न हो उठता है। उसका उदास मन सुन्दर कल्पनाओं में डूब जाता है। उसे लगता है कि मानो उसकी झोंपड़ी में कमल के फूल खिल उठे हों। मानो पत्थर जैसे दिल में प्यार की धारा उमड़ पड़ी हो या बाँस और बबूल के पेड़ जैसे नीरस जीवन में प्रफुल्लता और कोमलता रूपी शेफालिका के फूल झरने लगे हों।

प्रश्न 2. बच्चे की मुस्कान और बड़े व्यक्ति की मुस्कान में क्या अन्तर है?

उत्तर :- बच्चे की मुसकान निर्मल, निश्छल एवं मोहक होती है। उसमें किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं होता है। जबकि बड़ों की मुसकान कुटिल और बनावटीपन से पूरित होती है। उसमें स्वार्थ छिपा रहता है।

प्रश्न 3. कवि ने बच्चे की मुस्कान के सौन्दर्य को किन-किन बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर :- कवि ने बच्चे की मुसकान के सौन्दर्य को निम्नलिखित बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है

egyanarchive

1. बच्चे की मुस्कान से मृतक में भी जान आ जाती है।
2. यों लगता है-मानो झोपड़ी में कमल के फूल खिल उठे हों।
3. मुस्कराते शिश का स्पर्श पाकर पत्थर-हृदय व्यक्ति भी द्रवित हो जाता है।
4. यों लगता है-मानो बबूल और बांस से शेफालिका के फूल झरने लगे हों।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए

(क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?

उत्तर :-

भाव - (क) भाव यह है कि दाँत निकलते हुए शिशु की निश्छल मधुर मुस्कान देख कर कवि का मन प्रसन्न हो उठता है। उसे ऐसा लगने लगता है कि मानो उसकी झोंपड़ी में ही कमल खिल उठे हों। आशय यह है कि उस नन्हे से बच्चे को देखकर कवि का मन उल्लास से भर जाता है।

(ख) नन्हे से बच्चे के स्पर्श में रोमांच भरा उल्लास समाया रहता है। उसे स्पर्श करते ही ऐसा लगता है कि मानो बाँस और बबूल के पेड़ से शेफालिका के फूल झरने लगे हों। आशय यह है कि शिशु की मधुर मुसकान को देखकर नीरस और दूँठ हृदय में भी सरस प्रेम का संचार होने लगता है। रचना और अभिव्यक्ति-

प्रश्न 5. मुसकान और क्रोध भिन्न-भिन्न भाव हैं। इनकी उपस्थिति से बने वातावरण की भिन्नता का चित्रण कीजिए।

उत्तर :- मुसकान और क्रोध एक-दूसरे से विपरीत भिन्न-भिन्न भाव हैं। मुसकान मन की आन्तरिक प्रसन्नता को प्रकट करने वाला भाव है। इसमें स्वयं ही नहीं, सामने वाला भी प्रसन्न हो उठता है। जबकि क्रोध मन की उग्रता, चिड़चिड़ापन और अप्रसन्नता को व्यक्त करने वाला भाव है। इसको प्रकट करने से सामने वाला व्यक्ति भी झल्ला उठता है और क्रोध करने लगता है।

प्रश्न 6. दंतुरित मुसकान से बच्चे की उम्र का अनुमान लगाइए और तर्क सहित **उत्तर** दीजिए।

उत्तर :- 'दन्तुरित मुसकान' से स्पष्ट है कि अभी शिशु के दाँत निकलने आरम्भ हुए हैं। अतः उसकी आयु छह से आठ महीने के मध्य होनी चाहिए। क्योंकि इसी अवस्था में बच्चे के दाँत निकलना शुरू हो जाते हैं।

प्रश्न 7. बच्चे से कवि की मुलाकात का जो शब्द-चित्र उपस्थित हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :- कवि बच्चे से मिला तो उसकी दंतुरित मुसकान देखकर उसके थके, उदास मन में नये प्राणों का संचार हो गया। उसे ऐसा लगने लगा कि मानो उसकी सूनी झोंपड़ी में कमल आकर खिल गये हों, अर्थात् उसका मन खिल गया। उसके थके-माँदे शरीर और उदास मन में इस तरह मधुरता छा गई कि मानो बबूल के पेड़ पर शेफालिका के कोमल फूल झरने

egyanarchive

लगे हों। कवि को उस नन्हे से बच्चे ने पहली बार देखा था, इसलिए वह उसके लिए अनजान था फिर भी बच्चा उसे पहचानने के लिए बार-बार कनखियों से देखता था और अपना मुँह फेर लेता था। फिर धीरे-धीरे उन दोनों की नजरें मिलीं, जिससे उनमें स्नेह उमड़ा और बच्चा मुस्करा उठा। बच्चे की मधुर मुसकान ने कवि का मन हर लिया। इस प्रकार कवि ने प्रथम मुलाकात का शब्द-चित्र बहुत ही आत्मीयता पूरित भावों में भरकर खींचा है जिसमें अनजान स्नेह साकार हो उठा है।

"फसल"

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर :- कवि के अनुसार फसल पानी, मिट्टी, सूरज की किरण (धूप), हवा की थिरकन और मानव-परिश्रम के सन्तुलित संयोग से उपजती है। इसमें सभी नदियों के जल का जादू समाया हुआ है। सभी प्रकार की मिट्टियों के गुण-धर्म निहित हैं। सूरज की धूप और हवा के झोंकों का प्रभाव समाया हुआ है। इन सबके योगदान के साथ ही किसानों और मजदूरों का भी परिश्रम जुड़ा हुआ है। इन सबके सम्मिलित योगदान का प्रतिफल फसल है।

प्रश्न 2. कविता में फसल उपजाने के लिए आवश्यक तत्त्वों की बात कही गई है। वे आवश्यक तत्त्व कौन कौन से हैं?

उत्तर :- कविता में फसल उपजाने के लिए जिन आवश्यक तत्त्वों की बात कही गई है, वे तत्त्व निम्नलिखित हैं

1. नदियों का पानी
2. विभिन्न प्रकार की उपजाऊ मिट्टी
3. सूरज की किरणें
4. मन्द-मन्द बहती हवाएँ तथा
5. मानव का श्रम।

egyanarchive

प्रश्न 3. फसल को हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर :- इससे कवि यह व्यक्त करना चाहता है कि फसल को उगाने में मानव के हाथों का स्नेहिल श्रम लगा होता है, क्योंकि जब किसान और मजदूर अपने हाथों से श्रम करके फसल को उगाते और बढ़ाते हैं, तभी फसल तैयार होती है। फसल का फलना-फूलना ही किसानों के श्रम की गरिमा और महिमा है जिसके कारण फसलें बढ़कर तैयार होती हैं।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए

रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

उत्तर :-

भाव-उपर्युक्त पंक्तियों का भाव यह है कि फसल पर सूरज की किरणों (धूप) तथा हवा की थिरकन (झोंकों) का बहुत प्रभाव पड़ता है। अतः ये फसलें और कुछ नहीं हैं, सूरज की किरणों का बदला हुआ रूप हैं, क्योंकि फसलों में हरियाली सूरज की किरणों के प्रयास के कारण ही आती है और फसलों को बढ़ाने में हवा का भी अपना प्रभावी योगदान रहता है। इसलिए फसलें हवा का सिमटा-संकुचित रूप भी प्रतीत होती हैं।

रचना और अभिव्यक्ति -

प्रश्न 5.

कवि ने फसल को हजार-हजार खेतों की मिट्टी का गुण-धर्म कहा है

(क) मिट्टी के गुण-धर्म को आप किस तरह परिभाषित करेंगे?

(ख) वर्तमान जीवन-शैली मिटटी के गण-धर्म को किस-किस तरह प्रभावित करती है?

(ग) मिट्टी द्वारा अपना गुण-धर्म छोड़ने की स्थिति में क्या किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना की जा सकती है?

(घ) मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

उत्तर :-

(क) मिट्टी के गुण-धर्म को हम इस तरह परिभाषित करेंगे-मिट्टी में रचे-बसे विभिन्न प्राकृतिक तत्त्व, खनिज पदार्थ और वे पोषक तत्त्व जो मिट्टी में मिलकर उसके उपजाऊपन को विशेष बना देते हैं।

(ख) वर्तमान जीवन-शैली मिट्टी के गुण-धर्म को बुरी तरह प्रभावित एवं प्रदूषित कर रही है। उसकी उपजाऊ शक्ति को विषैले रसायनों के मिश्रण से समाप्त करती है जिसके कारण धरती की उत्पादन क्षमता घटती है। रसायनों और फैक्ट्रियों आदि से निकले विषैले पदार्थों से मिट्टी के मूल स्वभाव में विकृति आ रही है। भूगर्भ के जल के विदोहन से मिट्टी के पोषक तत्त्व समाप्त हो रहे हैं।

egyanarchive

(ग) मिट्टी द्वारा अपना गुण-धर्म छोड़ने की स्थिति में किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। जब मिट्टी उपजाऊ शक्ति वाला अपना गुण-धर्म ही छोड़ देगी तो ऐसी स्थिति में मिट्टी बंजर हो जायेगी जिसके कारण फसलें उत्पादित नहीं हो सकेंगी। जब फसलें ही नहीं होंगी तो प्राणी क्या खायेगा? ऐसी स्थिति में जीवन की कल्पना कैसे सम्भव हो सकती है?

(घ) मिट्टी के गुण-धर्म को पोषित करने में हमारी अहम भूमिका हो सकती है, क्योंकि हम संज्ञावान प्राणी हैं इसलिए हमें सबसे पहले मिट्टी के गुण-धर्म को प्रभावित करने वाले कारकों की जानकारी करनी चाहिए। रासायनिक खादों के स्थान पर कम्पोस्ट खाद का प्रयोग करना चाहिए। प्रदूषित करने वाले कारकों से मिट्टी की रक्षा करनी चाहिए।. अधिक फसल लेने के लालच में हमें कीटनाशक रसायनों का भी प्रयोग नहीं करना चाहिए।

पाठेतर सक्रियता -

प्रश्न - इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मीडिया द्वारा आपने किसानों की स्थिति के बारे में बहुत कुछ सुना, देखा और पढ़ा होगा। एक सुदृढ़ कृषि-व्यवस्था के लिए आप अपने सुझाव देते हुए अखबार के सम्पादक को पत्र लिखिए।

उत्तर :-

सेवा में,
श्रीयुत् सम्पादक महोदय,
दैनिक भास्कर,
जयपुर।

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से देश की सुदृढ़ कृषि व्यवस्था के लिए कुछ सुझाव देना चाहता हूँ। कृपया इन्हें प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।

यह सर्व-विदित है कि भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है लेकिन कृषि की अनदेखी के कारण यहाँ का किसान हमेशा ही उपेक्षित रहा है। अपने हाथों के स्पर्श से फसल उगाने वाल है और स्वयं भूखे रह जाता है। पिछले दिनों हजारों किसानों ने आर्थिक तंगी के कारण आत्महत्या कर ली। यह हमारी कृषि व्यवस्था पर एक तरह से सबसे बड़ा कलंक है। इस स्थिति को रोकने के लिए हमारी सरकार को किसानों के हित में योजनाएँ बनाकर लागू करनी चाहिए जिससे वे अपनी आर्थिक तंगी से उबर सकें। इसके लिए सबसे पहले किसानों को उन्नत बीज, उर्वरक तथा पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्हें सस्ती ब्याज दर पर बैंकों से कर्ज मुहैया करवाया जाना चाहिए। महाजनों के चंगुल से उन्हें मुक्त कराया जाना चाहिए। उनकी फसलों का बीमा कराया जाना चाहिए। उनको बिचौलियों से मुक्त किया जाना चाहिए ताकि वे अपनी फसलों के उचित दाम प्राप्त कर सकें। इसके साथ ही कृषि के क्षेत्र में शिक्षित युवकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे नवीन कृषि यन्त्रों एवं नवीन कृषि प्रणाली का प्रयोग उत्साह के साथ कर सकें।

भवदीय
राजेन्द्र मोहन सिंह
कुमावतों की बगीची,
जोबनेर, जयपुर।

egyanarchive

प्रश्न - फसलों के उत्पादन में महिलाओं के योगदान को हमारी अर्थव्यवस्था में महत्व क्यों नहीं दिया जाता है? इस बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

उत्तर :-

यह कथन सत्य है कि हमारी अर्थव्यवस्था में फसलों के उत्पादन में महिलाओं के योगदान को उचित महत्व नहीं दिया जाता है, जबकि किसान की पत्नी का कृषि कार्यों में विशेष योगदान होता है। वे अपने पतियों के साथ मिलकर खेतों पर कार्य करती हैं। पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था करती हैं, फसलें काटती और ढोती हैं। खेतों में पानी देती हैं। खेतों पर रोटी पहुँचाती हैं। फसलों की पक्षियों से रक्षा करती हैं। लेकिन फसल उगने और तैयार कराने में उनका इतना बड़ा सहयोग होने पर भी, उनके कार्यों को उनके पक्ष में गिना नहीं जाता है। इस कारण उनको महत्व नहीं दिया जाता है। एक दृष्टि से यह उचित नहीं है। हमें उनके सहयोगी भाव को स्वीकारना चाहिए . तथा उनके योगदान की चर्चा करनी चाहिए और उनके पतियों के समान ही उनके श्रम को भी महत्व दिया जाना चाहिए।

egyanarchive